Post updated - Meaning of Socialization,
Process of Socialization.

(B.A 3rd Psychology Hons. Paper-V)

Prepared By:

Dr. Gurdeep Kaur Athwal
Asst. Prof.
Dept. of Psychology
B. N. College: T.M.B.U Bhagalpur
Email: gurdeepathwal18@gmail.com

हालांकि ऐसी कोई बात नहीं है तो इससे भी प्रयोज्य के आक्रमकता में वृद्धि हो जाती है।

9. व्यक्तित्व कारक :-

Megargee द्वारा किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक खास तरह का व्यक्ति ही होता है जो प्राय: आक्रामक व्यवहार किया करते है। उसके अनुसार वैसे पुरुष जिनमें एक अतिरिक्त y क्रोमोसोम होता है ऐसे व्यक्ति कम बुद्धि एवं लम्बे कद के होते है। ऐसे व्यक्ति दण्डित अपराधी एवं आक्रमकता दिखलाने में अधिक सक्षम होते है। Delgardo के अनुसार: मस्तिष्क की संरचना असमानता से भी व्यक्ति में आक्रमकता में वृद्धि होती है।

इस तरह स्पष्ट होता है कि आक्रमकता के कई निर्धारक तत्व होते है जो आक्रमकता की उत्पत्ति में सहायक होते है।

Q. समाजीकरण क्या है? इसकी मुख्य प्रक्रियाओं का वर्णन करें।

Ans :- जन्म के तुरन्त बाद मानव शिशु न सामाजिक होता है और न असामाजिक। उस समय केवल वह जीवित प्राणी होता है। धीरे-धीरे वह समाज की विशेष संस्कृति में बढ़ते हुए सामाजिक प्राणी बन जाता है। वह अपनी अवश्यकताओं को पूरा करने में समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अन्त: क्रिया करता है। जिससे उनमें नये-नये अनुभवो की प्राप्ति होती है। इन अनुभवो के फलस्वरूप बच्चा सामाजिक परम्परा एवं रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करना सीख लेता है। समाज के नियमों को सीखने तथा उसके अनुसार व्यवहार करने की उस प्रक्रिया को समाजीकरण कहते है।

Atkinson, Atkinson & Hallgard 1983 के अनुसार :- सामाजिक वातावरण द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तियों के गुणों एवं आदतों व्यवहारों को संगठित करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है।

Worchel & Cooper के अनुसार :- वह प्रक्रिया जिसके अनुसार द्वारा एक व्यक्ति सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण व्यवहार को सीखता है समाजीकरण कहलाता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया

समाजिकरण का मूलतत्व सामाजिक सीखना है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु के दिन तक कुछ न कुछ नई अनुक्रियाँ एवं व्यवहारों को सीखता रहता है। यही कारण है समाजीकरण की प्रक्रिया को एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया माना गया है। समाजीकरण की प्रमुख प्रक्रियाएँ निम्नांकित है।

1. पालन-पोषण प्रणाली :-

व्यक्ति का समाजीकरण पालन पोषण द्वारा अधि प्रभावित होता है। विभिन्न समाज एवं संस्कृति में बच्चों की पालन पोषण की प्रणाली अलग-अलग होती है। Newcom 1966 के अनुसार :- जिन बच्चों के पालन पोषण में माता-पिता द्वारा अधिक ध्यान एवं देख-रेख उनके द्वारा स्वयं किया जाता है उनमें सामाजिक नियमों को सीखने तथा उसके अनुकूल व्यवहार करने की प्रेरणा होती है। फलस्वरूप ऐसे बच्चों में समाजीकरण की प्रक्रिया संतोषजनक होती है।

2. अनुकरण :-

समाजीकरण अनुकूल की प्रक्रिया द्वारा भी संपन्न होता है। अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा बच्चे तथा वयस्क दोनों ही समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के व्यवहारों को सीखते हैं। जिससे उनमें समाजीकरण की प्रक्रिया होती है। ऐसे ऐसे व्यक्तियों के व्यवहारों का अनुकरण इसलिए करते हैं कि ऐसे करने से उनकी सामाजिक मान्यता अधिक बढ़ जाएगी।

3. संसूचन या सुझाव :-

सुझाव समाजीकरण की एक प्रमुख प्रक्रिया है। Evans 1974 के अनुसार :- सुझाव एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के आलोचना करने की मानसिक क्षमता को कम कर दिया जाता है। और व्यक्ति मिलने वाली सूचनाओं को बिना संदेह तर्क तथा आलोचना को स्वीकार कर लेता है। सामाजिक अभियोजन की भिन्न-भिन्न उपयोगिता के बारे में वे बच्चों को तरह-तरह के सुझाव देते हैं। जिससे उनका समाजीकरण तेजी से होता है। जैसे अपने से बड़े के साथ कैसे बोलना चाहिए, कैसे व्यवहार करना चाहिए आदि के बारे में माता-पिता तथा शिक्षक बच्चों को अच्छे अच्छे सुझाव दिया करते हैं। जिससे उनमें समाजीकरण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ती है।

4. सहानुभूति :-

सहानुभूति की प्रक्रिया द्वारा भी व्यक्ति का समाजीकरण होता है। Jame Deever 1983. के अनुसार दूसरे के भावों एवं संवेगों के स्वाभाविक अभिव्यक्ति को देखकर उसी प्रकार के भावों एवं संवेगों को अपने में अनुभव करने की प्रवृत्ति को सहानुभूति कहते हैं। इस तरह से किसी को दुःखी देखकर अपने-आप में भी दुःख का अनुभव करना सहानुभूति का उदाहरण है। समाज-मनोवैज्ञानिकों का मत यह है कि जिन व्यक्तियों में सहानुभूति का गुण अधिक होता है उनकी सामाजिक मान्यता काफी अधिक होती है। उन्हें दूसरे व्यक्ति के साथ सामाजिक समायोजन करने में काफी मदद मिलती है।

5. तदात्मय :-

जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्तियों को मॉडल मानकर उसके व्यवहारों को अपनाने की कोशिश करता है तो इस प्रक्रिया को तदात्मय की संज्ञा दी जाती है। तदात्मय द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के बिल्कुल समान व्यवहार करना चाहता है। इस प्रकार का तदात्मय बच्चों में अधिक पाया जाता है जिसके कारण वे माता-पिता के व्यवहारों को सीखते हैं। तदात्मय का दूसरा रूप वह होता है जिसमें व्यक्ति दूसरों के व्यवहारों को केवल अपनाता ही नहीं है बल्कि उसकी प्रत्याशा या उम्मीद के अनुसार व्यवहार करने को तत्पर रहता है।

6. संयोग :-

संयोग द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया भी होती है। संयोग की भावना बच्चों तथा वयस्कों दोनों में पायी जाती है। कुछ ऐसे भी अध्ययन किए गए हैं जिसके आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि जब व्यक्तियों में संयोग की भावना तीव्र होती है तो ऐसे व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ किसी भी तरह की किसी भी परिस्थितियों में समायोजन आसानी से कर लेते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें कुछ नये सामाजिक व्यवहारों के बारे में जानने तथा सीखने की सुविधा होती है। Hollander के अनुसार :- संयोग की भावना तीव्र होने से बच्चों तथा वयस्कों दोनों में समाजीकरण अधिक तेजी से होता है।

7. प्रतियोगिता :-

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी लक्ष्य को समान रूप से महत्वपूर्ण समझकर उसे प्राप्त करने का पूरा-पूरा प्रयत्न करते हैं तो इस स्थिति को प्रतियोगिता की संज्ञा दी जाती है। प्रतियोगिता के द्वारा ही समाजीकरण काफी तेजी से होता है। प्रतियोगिता की भावना रखने वाले व्यक्ति में अधिक धन कमाने, अधिक उपलब्धि प्राप्त करने तथा सामाजिक प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करने की आकांक्षा काफी अधिक होती है। फलस्वरूप किसी भी सामाजिक व्यवहार के भिन्न-भिन्न पहलू पर वे काफी ध्यान देते हैं उन्हें सीखने की कोशिश करते हैं इससे उनका समाजीकरण तीव्रता से होता है।

8. भाषा :-

भाषा समाजीकरण की एक प्रमुख प्रक्रिया है। भाषा द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छाओं आवश्यकताओं आदि को दूसरे तक पहुँचाता है तथा दूसरों की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं को समझने की कोशिश करता है। स्कूल में बच्चों को शिक्षक विभिन्न प्रकार के शिष्टाचार के बारे भाषा के माध्यम से बताते हैं। इस परिस्थिति में किस प्रकार का सामाजिक व्यवहार करना चाहिए भाषा के माध्यम से माता-पिता बच्चों को शिक्षा देते हैं।

9. प्रचार का माध्यम :-

समाजिकरण प्रचार के माध्यमो द्वारा भी संपन्न होता है प्रचार के भिन्न माध्यम जैसे रेडियो टेलीविजन, सिनेमा, अखबार आदि द्वारा समाजिकरण की प्रक्रिया तीव्रता से होती है। व्यक्तियो को इन माध्यमो द्वारा तरह-तरह की बाते बतलायी जाती है। प्रचार के कुछ माध्यमों से विशेषकर टेलीविजन तथा सिनेमा के माध्यम से बच्चा जो देखते है उसका अनुकरण कर वैसा ही व्यवहार अपने जीवन में करना चाहते है।

10. समाजिक मनोवृति का विकास :-

समाजिक मनोवृति द्वारा भी समाजिकरण की प्रक्रिया होती है। यदि व्यक्ति में अन्य व्यक्तियो तथा समाजिक क्रियाओं जैसे, विवाह, जन्मदिन पार्टी, आदि के प्रति अनुकूल समाजिक मनोवृति का विकास होता है तो उस व्यक्ति का समाजिकरण अधिक तेजी से होता है। जिन व्यक्तियो का समाजिक मनोवृति समाजिक धारणाओं एवं संस्थाओं के प्रति अनुकूल होती है उसकी समाजिक मान्यता अधिक बढ़ जाती है। फलस्वरूप उसे समाजिक समायोजन में काफी मदद मिलती है जिससे उनका समाजीकरण की प्रक्रिया अधिक तीव्रता से होती है।

इस तरह हम देखते है कि व्यक्ति का समाजिकरण अनेको प्रक्रियाओं द्वारा सम्पन्न होता है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

Q. जनसंख्या विस्फोट के मनोवैज्ञानिक ...